भारत नेपाल सीमावर्ती जनपदों में जनसांख्यिकी परिवर्तन

डॉ0 अम्बुज कुमार सिंह*

औद्योगिक क्रान्ति वैज्ञानिक प्रगति सूचना शन्ति और आर्थिक विकास के फलस्वरूप विश्व बदला है। लोग अपेक्षाकृत सूचित एवं शिक्षित हुए है। नयी–नयी संभावनाओं के द्वार भी खुले है। विशेषकर पिछली दो शताब्दियों में विश्व के लगभग सभी देशों में अपनी जनसंख्या की जीवन स्थितियों को सुधारने के लिए विभिन्न विकासात्मक नीतियेा अपनाई है। चीन जैसे कई देशों में कुछ नीतियों के साकारात्मक परिणाम भी आए है। जिनसे अन्य राष्टत्रे ने भी प्रेरणाए ग्रहण की है। भारत जैसे अधिकतम विकासशील देश अभी भी बुनियादी सुविधाएं जुटाने में लगे हुए है। और अधारभूत संरचना का विकास करने में व्यस्त है। जनसंख्या का अधिक होना एक ऐसी मूलभूत समस्या है। जिससे निपटने में तीसरी दुनिया का धन और समय बेकार जाता है।

विश्व की जनसंख्या की दृष्टि से भारत की जनसंख्या अपने क्षेत्र से छः गुना आधिक है देश 2.4 प्रतिशत विश्व के क्षेत्र में 16.7 प्रतिशत विश्व जनसंख्या निवास करती है स्वभाविक है कि अनेक समाजिक समस्याएं प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उच्च जनसंख्या आधार के कारण उत्पन्न हुयी है।

उत्तर प्रदेश की जनसंख्या देश की जनसंख्या की जनसंख्या का 16.17 प्रतिशत है जापान विश्व का सांतवा सबसे बड़ा देश है उ0 प्र0 की जनसंख्या जापान की कुल जनसंख्या से भी अधिक है उ0 प्र0 तथा लगभग पूरे देश की जनसंख्या वितरण के कारणों में अच्छी कृषि का विकास एक महत्वपूर्ण कारण की भूमिका निभाता है क्योंकि भारत की आर्थिक स्थिति कृषि पर अधारित है।

मैदानी क्षेत्रों में जनसंख्या अधिक है जो, प्रदेश बड़े है उनकी जनसंख्या भी– अधिक है। खीरी का क्षेत्रफल भी अधिक है तो उसकी जनसंख्या भी अधिक है ताप्ती नदी के किनारे बसे सि=ार्थनगर तथा वलरामपुर मे क्षेत्रफल के अनुपात मे जनसंख्या अधिक है जो क्षेत्र पहाड़ी या तराई या वन क्षेत्र है उनका घनत्व भी कम है। खीरी, वलरामपुर तथा पीलीभीत का घनत्व इसलिए कम है ऐसे क्षेत्रों मे मनुष्य आवास के लिए आकर्षित नही होता सामान्यता, पूरे उत्तर प्रदेश का गंगा मैदान देश में सर्वाधिक घनत्व वाला क्षेत्र है लेकिन नेपाल सीमा से जुड़े उत्तर प्रदेश के तराई क्षेत्र वाले जिलों मे जनसंख्या घनत्व अपेक्षाकृत कम है।

जनसंख्या की परिवर्तन का मानव संसाधन विकास पर पड़ने वाला प्रभाव बड़ा जटिल होता है। जनसंख्या बृ= का प्रभाव है रोजगार, शिक्षा स्वास्थ्य तथा अन्य सुविधाओं की मांग पर पड़ता है। इसमें और भी सहन्याए होती है। शिशु मृत्युदर मे कमी से स्वास्थ्य सुरक्षा पर होने वाले धन में कमी आ सकती है इससे धन की वचत होगी तथा यह धन अन्य क्षेत्र मे मानव विकास के लिए खर्च हो सकता है। इसके अतिरिक्त गावों से गरीब क्षेत्रों मे पलायन तथा साथ ही साथ गरीब से अमीर देशों मे पलायन मानव संसाधन विकास के मूल लाभ को प्रभावित करता है जनसंख्या वृ= के साथ पर्यावरण क्षरण, एवं संसाधनों मे कमी होना जीवन की गुणवता